Ee – मेरे पास आओ, जो थके हुए और बोझ से दबे हुए हैं, और मैं तुम्हें
विश्राम दूंगा मत्ती ११:२०-३० | 1

– Save This Page as a PDF–

मेरे पास आओ, जो थके हुए और बोझ से दबे हुए हैं, और मैं तुम्हें विश्राम दूंगा

मत्ती ११:२०-३०

खोदाई: येशुआ उल्लेखित प्रत्येक शहर पर क्या निर्णय सुनाता है? उनका न्याय सूर और सीदोन से भी बुरा क्यों होगा? यदि मसीह के रहस्योद्घाटन और उनके चमत्कारों को अस्वीकार कर दिया गया है, तो निर्णय क्या है? सुसमाचार बुद्धिमानों और विद्वानों से क्यों छिपा रहता है? ईश्वर को वास्तव में कौन जानता है? अपना जूआ उठाने से यीशु का क्या मतलब है? हमारे उद्धारकर्ता का क्या मतलब है जब वह कहता है: मेरा जूआ आसान है और मेरा बोझ हल्का है?

चिंतन: ऐसे समय में जब आप तनावग्रस्त या निराश महसूस कर सकते हैं, तब भी हमें येशुआ के पास उनके दृष्टिकोण और हमारे दिल में सच्चे शालोम के लिए आने का आह्वान किया जाता है। क्या आप आज उसकी योजना पर चल रहे हैं? क्या आप चल रही समस्याओं से थक चुके हैं? क्या आप चिंता और तनाव से दबे हुए हैं? क्या यीशु का जूआ आपके कंधों पर हल्का सा पड़ा हुआ है या आप उससे बाहर निकलने के लिए संघर्ष कर रहे हैं? क्यों? उसका मार्ग अपनाने से विश्राम कैसे मिलता है?

फरीसी यहूदी धर्म के बढ़ते प्रतिरोध और बाद में उनके संदेश की अस्वीकृति को देखते हुए, मसीहा ने उन शहरों पर शोक व्यक्त किया जहां उनके चमत्कार किए गए थे। हमारे प्रभु के शब्दों से संकेत मिलता है कि यहूदी लोगों के दिल अन्यजातियों के दिलों से अधिक कठोर थे, क्योंकि यदि अन्यजातियों के क्षेत्र में चमत्कार किए गए होते, तो वे उनके संदेश पर विश्वास करते और विश्वास में उनकी ओर मुड़ जाते। जबकि हमारे पास बेथसैदा और कफरनहूम दोनों में चमत्कारों के रिकॉर्ड हैं, बेथसैदानाम के दो स्थान थे। जॉर्डन के पूर्व में, बेथसैदा जूलियास (लूका ९:१०; मरकुस ८:२२); दूसरा गलील झील के पश्चिमी तट पर, जो अन्द्रियास और पतरस का जन्मस्थान था। उत्तरार्द्ध यहाँ दृश्य में है। बेथसैदा का अर्थ है मछलियों का घर, जो इसके मुख्य व्यापार का संकेत देता है।

कफरनहूम एक बड़ा शहर था जो बेथसैदा के उत्तर में स्थित था और गलील में यीशु के मंत्रालय का गृह आधार था। कफरनहूम वह स्थान था जहां मत्तीकर संग्रहकर्ता के बूथ पर बैठता था (मत्ती ९:९)। दक्षिण में मगदला, रंगरेजों का शहर, मरियम मगदलीनी का घर था (मरकुस १५:४०; लूका ८:२; यूहन्ना २०:१)। तल्मूड इसकी दुकानों और इसके ऊनी कपड़ों का उल्लेख करता है, इसकी विशाल संपत्ति के बारे में बात करता है, लेकिन इसके निवासियों के भ्रष्टाचार के बारे में भी बताता है।

Ee – मेरे पास आओ, जो थके हुए और बोझ से दबे हुए हैं, और मैं तुम्हें
विश्राम दूंगा मत्ती ११:२०-३० | 2

हमारे पास चोराज़िनमें हमारे प्रभु द्वारा किए गए एक भी चमत्कार का रिकॉर्ड नहीं है। न ही हमारे पास यीशु के चोराज़िनमें होने का कोई रिकॉर्ड है। लेकिन यह यरूशलेम के क्षेत्र में था और उसके संदेश से प्रभावित होना चाहिए था। यह इसके अनाज के लिए मनाया जाता था, और अगर यह येरूशलेम के करीब होता तो मंदिर के लिए अनाज का स्रोत होता। परिणामस्वरूप, क्योंकि चोराज़िन और बेथसैदा के लोगों के पास मसीहा के शब्दों और कार्यों दोनों का प्रकाश था, वे अधीन थे उन अन्यजातियों से भी बड़ा न्याय, जिनके पास वह गवाही नहीं थी।

तब यीशु ने उन शहरों की निंदा करना शुरू कर दिया जहां उसके अधिकांश चमत्कार किए गए थे, क्योंकि उन्होंने पश्चाताप नहीं किया था। इन शहरों के प्रति ईसा मसीह का व्यवहार उन लोगों के प्रति उनकी तुलनात्मक रूप से हल्की फटकार की तुलना में कम उचित प्रतीत होता है जिन्होंने उनकी खुले तौर पर आलोचना की थी। अधिकांश भाग के लिए, कफरनहूम, चोराज़िन और बेथसैदा, शहर जो उन स्थानों के प्रतीक थे जहां उनके चमत्कार किए गए थे, उन्होंने मनमौजी रब्बी के खिलाफ कोई सीधी कार्रवाई नहीं की, उन्होंने केवल उसे नजरअंदाज कर दिया। वे बस अपने व्यस्त जीवन में लगे रहे। उदासीनता, जानबूझकर या अनजाने में, अविश्वास का एक सूक्ष्म रूप है। यह पूरी तरह से यहोवा की उपेक्षा करता है कि वह बहस करने लायक मुद्दा ही नहीं है। उसे आलोचना करने लायक गंभीरता से नहीं लिया जाना चाहिए।

तुम पर धिक्कार है, चोराज़िन।तुम पर धिक्कार है, बेथसैदा। तब शायद सबसे ठोस कथन आता है – कि यदि जो चमत्कार आप में किए गए थे, वे सोर और सिडोन के गैर-यहूदी क्षेत्रों में किए गए होते, तो उन्होंने बहुत पहले टाट और राख में पश्चाताप किया होता (मत्ती ११:२०-२१)।सोर और सीदोन की दुष्टता और उनके विरुद्ध न्याय की भविष्यवाणियाँ तानाख में विस्तृत हैं (यशायाह Er पर मेरी टिप्पणी देखें – विलाप करो, तर्शीश के जहाजों; तुम्हारा किला नष्ट हो गया है)। टाट और राख दुख और मातम से जुड़े प्राचीन निकट पूर्वी रीति-रिवाजों को संदर्भित करते हैं (योना ३:६; दान ९:३; ईएस ४:३)। चूंकि फिलिप, अन्द्रियास और पतरस बेथसैदा से थे, येशुआ के मसीहाई दावों को सुनने और समझने का पर्याप्त अवसर था (यूहन्ना १:४४)।

परन्तु मैं तुम से कहता हूं, न्याय के दिन तुम्हारी दशा से सूर और सैदा की दशा अधिक सहने योग्य होगी (मत्ती ११:२२)। यीशु यहाँ जो कहते हैं उससे यह स्पष्ट है कि वह कई बार चोराज़िन गए थे क्योंकि उनके अधिकांश चमत्कार अन्य दो शहरों में किए गए थे। अपने सुसमाचार के अंत में, युहन्ना ने कहा कि ईसा मसीह ने जो कुछ किया उसे लिखना असंभव है। इसलिए, सुसमाचार लेखकों को अपने लेखन में चयनात्मक होना पड़ा। चोराज़िन उस सामग्री का एक उदाहरण है जिसे पवित्र आत्मा की प्रेरणा के तहत छोड़ दिया गया था। और हे कफरनहूम, क्या तू स्वर्ग पर उठा लिया जाएगा? नहीं, तुम शोल तक जाओगे (मत्ती ११:२३ए)। आमतौर पर अंग्रेजी में शीओल के रूप में लाया जाता है; ग्रीक में इसका अनुवाद पाताल लोक, यानी मृतकों का स्थान है। तानाख शोल में एक धुंधली, अस्पष्ट अवस्था है जहां मृत आत्माएं इंतजार करती हैं। अक्सर, अंग्रेजी संस्करण हमें हेल शब्द कहते हैं।

क्योंकि जो आश्चर्यकर्म तुम में किए गए, यदि वे सदोम में किए गए होते, तो वह आज तक बना

Ee – मेरे पास आओ, जो थके हुए और बोझ से दबे हुए हैं, और मैं तुम्हें
विश्राम दूंगा मत्ती ११:२०-३० | 3

रहता। परन्तु मैं तुम से कहता हूं, कि न्याय के दिन सदोम के लिये यह तुम्हारी अपेक्षा अधिक सहनीय होगा (उत्पत्ति १९:२३-२५) (मत्ती ११:२३बी-२४)। चमत्कार देखने पर भी उन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया। इस बिंदु पर, हमारे प्रभुओं के चमत्कारों का उद्देश्य इज़राइल को यह प्रमाणित करने के लिए संकेत के रूप में कार्य करना था कि वह वास्तव में मसीहा था। जबकि सभी अविश्वासियों का अंत आग की झील में होगा (प्रकाशितबचन Fm पर मेरी टिप्पणी देखें – शैतान को उसकी जेल से रिहा कर दिया जाएगा और राष्ट्रों को धोखा देने के लिए बाहर जाएगा), नरक में सजा की डिग्री होगी।

सिद्धांत यह प्रतीत होता है, कि हमारा ज्ञान जितना अधिक होगा, हमारी जिम्मेदारी उतनी ही अधिक होगी, और यदि हम अपनी जिम्मेदारी में असफल होते हैं तो हमारी सजा भी उतनी ही अधिक होगी। यह अच्छी तरह से हो सकता है कि नरक में सज़ा के विभिन्न चरण वस्तुनिष्ठ परिस्थितियों का उतना मामला नहीं है जितना कि दर्द और यहोवासे अलगाव के बारे में व्यक्तिपरक जागरूकता का। यह स्वर्ग में इनाम की अलग-अलग डिग्री की हमारी अवधारणा के समानांतर है (दानिय्येल १२:३; लूका १९:११-२७; पहला कुरिन्थियों ३:१४-१५; दूसरा कुरिन्थियों ५:१०)। कुछ हद तक, सज़ा की अलग-अलग डिग्री इस तथ्य को दर्शाती है कि पश्चाताप न करने वाले पापियों को उनके दिल की बुरी इच्छाओं के हवाले कर दिया जाएगा। अपनी स्वयं की दुष्टता के साथ अनंत काल तक जीने से उन्हें जो दुख का अनुभव होगा, वह इस बात की जागरूकता की डिग्री के अनुपात में होगा कि जब उन्होंने बुराई को चुना था तब वे क्या कर रहे थे। ये हमारी अंतिम स्थिति के निहितार्थ हैं:

१. इस जीवन में हम जो निर्णय लेते हैं, वे हमारी भविष्य की स्थिति को न केवल कुछ समय के लिए, बल्कि अनंत काल तक नियंत्रित करेंगे (देखें Ms – विश्वासि की शाश्वत सुरक्षा) । इसलिए, हमें इन्हें बनाते समय असाधारण सावधानी और परिश्रम बरतना चाहिए।

२. इस जीवन की परिस्थितियाँ, जैसा कि रब्बी शाऊल ने कहा है, क्षणभंगुर हैं। आने वाले अनंत काल के साथ तुलना करने पर वे सापेक्ष महत्वहीन हो जाते हैं।

३. हमारी अंतिम अवस्था की प्रकृति इस जीवन में ज्ञात किसी भी चीज़ से कहीं अधिक तीव्र है। उन्हें चित्रित करने के लिए उपयोग की गई छवियां पूरी तरह से यह बताने के लिए अपर्याप्त हैं कि आगे क्या होने वाला है। उदाहरण के लिए, स्वर्ग किसी भी आनंद से कहीं अधिक होगा जिसे हम यहां नरककी पीड़ा के रूप में जानते हैं।

४. स्वर्ग के आनंद को केवल इस जीवन के सुखों की तीव्रता के रूप में नहीं समझा जाना चाहिए। स्वर्ग का प्राथमिक आयाम यहोवाके साथ विश्वासि की उपस्थिति है।

५. नरकन केवल शारीरिक पीड़ा का स्थान है, बल्कि उससे भी अधिक हमारे प्रभु से पूर्ण और अंतिम अलगाव का भयानक अकेलापन है।

६. शोलको मुख्य रूप से प्रतिशोधी ईश्वरद्वारा अविश्वासियों को दी गई सजा के रूप में नहीं

Ee – मेरे पास आओ, जो थके हुए और बोझ से दबे हुए हैं, और मैं तुम्हें
विश्राम दूंगा मत्ती ११:२०-३० | 4

सोचा जाना चाहिए, बल्कि येशुआहा-मेशियाच को अस्वीकार करने वालों द्वारा चुने गए पापपूर्ण जीवन के प्राकृतिक परिणाम के रूप में माना जाना चाहिए।

ऐसा प्रतीत होता है कि यद्यपि सभी मनुष्यों को या तो स्वर्ग या नर्क में भेज दिया जाएगा, स्वर्ग में रहने वालों के लिए कुछ हद तक इनाम होगा, और नर्क में रहने वालों के लिए कुछ हद तक सज़ा होगी।

अस्वीकृति और न्याय का वर्णन करने वाले इन छंदों के बीच में, यह सुनना ताज़ा है कि यीशु अपने पिता से कैसे प्रार्थना करते हैं। आश्चर्यजनक रूप से, वहस्वर्ग और पृथ्वी के ईश्वर के प्रति कृतज्ञता के शब्दों के साथ शुरुआत करता है। यह इस तथ्य की ओर इशारा करता है कि हमारे प्रभु ने पिता की योजना पर तब भी भरोसा किया जब चीजें सही नहीं हो रही थीं क्योंकि इज़राइल राष्ट्र ने पहले ही उन्हें अस्वीकार कर दिया था (देखें ईएच – यीशु को महासभा द्वारा आधिकारिक तौर पर अस्वीकार कर दिया गया है)। उस समय यीशु ने कहा, हे पिता, स्वर्ग और पृथ्वी के प्रभु, मैं तेरी स्तुति करता हूं, क्योंकि तू ने ये बातें बुद्धिमानों और ज्ञानियों से छिपा रखीं, और बालकों पर प्रगट की हैं। हाशेम सभी पर प्रभुत्व रखता है, और कुछ भी नहीं, यहां तक कि इज़राइल के लोगों द्वारा अस्वीकृति भी, मसीहाई मुक्ति की उसकी अंतिम योजनाओं को विफल नहीं करेगी। जो लोग अपने आप को बुद्धिमान समझते हैं, उन्होंने अपनी भ्रष्टता के कारण सत्य को नहीं देखा; परन्तु तनख़ के नेक लोगों के कारण जिन लोगों को छोटे बच्चों का विश्वास था, उन्होंने प्रकाश देखा। क्योंकि उन्होंने प्रभु की बातों के प्रति अपने हृदय खोले, वे हमारे उद्धारकर्ता के माध्यम से मुक्ति प्राप्त करने में सक्षम हुए। हाँ, पिता, यह वही है जो करने से आप प्रसन्न थे (मत्ती ११:२५-२६)।

मसीहाअपनी प्रार्थना जारी रखता है और इस तथ्य पर आनन्दित होता है कि मेरे पिता द्वारा सभी चीजें मुझे सौंपी गई हैं। इसमें कोई संदेह नहीं है कि उनके श्रोताओं के मन में, कि उद्धारकर्ता द्वारा ईश्वर को मेरे पिता के रूप में संदर्भित करना देवता का दावा था। यहूदियों ने पहले यीशु पर खुद को ईश्वर के बराबर बनाने का आरोप लगाया था (यूहन्ना ५:१८)। जब एक अन्य अवसर पर उन्होंने कहा: मैं और पिता एक हैं, तो उनके यहूदी विरोधियों ने ईशनिंदा के लिए उन्हें पत्थर मारने के लिए पत्थर उठाए (यूहन्ना १०:३०-३१ और यूहन्ना १०:१५, १७-१८, २५, २९ ३२-३८) .

अपनी दिव्य उत्पत्ति पर येशु ने स्वयं जोर दिया है जब उन्होंने कहा: पिता के अलावा पुत्र को कोई नहीं जानता, और पुत्र के अलावा कोई भी पिता को नहीं जानता और जिनके सामने पुत्र उसे प्रकट करना चाहता है (मत्ती ११:२७)। इस तरह के बयानों से, यह स्पष्ट है कि हम मसीह को केवल एक अच्छे रब्बी या यहां तक कि एक महान भविष्यद्वक्ता के रूप में भी स्वीकार नहीं कर सकते हैं। वह इस्राएल के ईश्वर के बारे में अद्वितीय ज्ञान होने का दावा करता है क्योंकि यीशुस्वयं अनंत काल से पिता की उपस्थिति में था। दर्शन और धर्म यहोवा या उसके सत्य का तर्क देने में पूरी तरह से असमर्थ हैं क्योंकि वे सीमित, निचले स्तर के हैं। मानवीय विचार और अवधारणाएँ सांसारिक हैं और आध्यात्मिक फल या मार्गदर्शन पैदा करने में पूरी तरह से बेकार हैं। यहोवा को मानवीय समझ के अंधेरे और खालीपन को तोड़ना चाहिए क्योंकि उनके

Ee – मेरे पास आओ, जो थके हुए और बोझ से दबे हुए हैं, और मैं तुम्हें
विश्राम दूंगा मत्ती ११:२०-३० | 5

परिवार में अपनाए जाने से पहले, हम आध्यात्मिक रूप से मृत हैं (देखें Bw– परमेश्वर हमारे लिए क्या करता है विश्वास का क्षण में)।

ईश्वर की संप्रभुता पर जोर देने वाली उनकी प्रार्थना के
तुरंत बाद, मसीह किसी भी संभावित शिष्य के लिए प्रार्थना करते हैं। यहां, एक ही सिक्के के दो पहलुओं की तरह, हम ईश्वर की संप्रभुता और मानव जाति की उसे जवाब देने की स्वतंत्र इच्छा दोनों को देख सकते हैं (यूहन्ना ३:१६)। यह सुरमा है, जहां दो बातें सत्य हैं, लेकिन (मानवीय दृष्टिकोण से) विपरीत प्रतीत होती हैं। त्रित्व ईश्वर ऐसी ही है, धर्मग्रंथ घोषणा करते हैं कि ईश्वर एक है, “शमा, इस्राएल: यहोवा हमारा ईश्वर है, यहोवा एक है” (व्यवस्थाविवरण ६:४)। लेकिन बाइबल हमें यह भी सिखाती है कि ईश्वरत्व के भीतर तीन अलग-अलग व्यक्तित्व हैं (उत्पत्ति १:२६; मत्ती ३:१६-१७; युहन्ना १६:१३-१५; दूसरा कुरिन्थियों १३:१४)। वह अंततः नियंत्रण में है, फिर भी हमारे पास उसकी बुलाबा का जवाब देने की जिम्मेदारी और स्वतंत्रता है। यीशु सारी मानवजाति से कहते हैं: हे सब थके हुए और बोझ से दबे हुए लोगों, मेरे पास आओ, और मैं तुम्हें विश्राम दूंगा (मत्ती ११:२८)। अविश्वास और अस्वीकृति के बीच भी, मसीह ने अपने श्रोताओं को उस पर भरोसा करने के लिए एक दयालु निमंत्रण दिया।

यह संभव है कि आप यहोवा के निमंत्रण के बारे में बहुत कुछ जानें और कभी भी व्यक्तिगत रूप से इसका जवाब न दें। हम ईश्वर को “नहीं” कह सकते हैं और उसे कायम रख सकते हैं। फिर भी उनका निमंत्रण स्पष्ट और समझौता योग्य नहीं है। वह सब कुछ देता है और हम उसे सब कुछ देते हैं। यह सरल और पूर्ण है. वह जो मांगता है उसमें स्पष्ट है और जो प्रदान करता है उसमें भी स्पष्ट है। अदन के बगीचे में आदम की तरह, चुनाव हम पर निर्भर है।

क्या यह अविश्वसनीय नहीं है कि प्रभु चुनाव हम पर छोड़ देते हैं? इसके बारे में सोचो। जीवन में ऐसी कई चीज़ें हैं जिन्हें हम चुन नहीं सकते। उदाहरण के लिए, हम मौसम का चयन नहीं कर सकते। हम अर्थव्यवस्था को नियंत्रित नहीं कर सकते. हम यह नहीं चुन सकते कि हम बड़ी नाक, नीली आँखों या ढेर सारे बालों के साथ पैदा हुए हैं या नहीं। हम यह भी नहीं चुन सकते कि लोग हमें किस प्रकार प्रतिक्रिया दें।

Ee – मेरे पास आओ, जो थके हुए और बोझ से दबे हुए हैं, और मैं तुम्हें
विश्राम दूंगा मत्ती ११:२०-३० | 6

लेकिन हम चुन सकते हैं कि हम अनंत काल कहाँ बिताएँ। बड़ा विकल्प, परमेश्वर हम पर छोड़ता है। महत्वपूर्ण निर्णय हमारा है. आप उनके निमंत्रण के साथ क्या कर रहे हैं?

टोरा एक सकारात्मक आध्यात्मिक जिम्मेदारी प्रस्तुत करता है क्योंकि एक यहूदी अपनी आज्ञाओं को प्रेम से पूरा करने का प्रयास करता है (ट्रैक्टेट एवोट ३:६)। अधिकांश यहूदी आज भी टोरा को एक नकारात्मक बोझ नहीं बल्कि जश्न मनाने के लिए यहोवा की ओर से एक उपहार मानते हैं, जैसा कि हर शबात पर टोरा सेवा में देखा जाता है। आख़िरकार, एक धन्य जीवन कैसे प्राप्त किया जाए, इस पर एक रोडमैप होना एक महान उपहार है। हालाँकि, ईसा मसीह के समय में फरीसी यहूदी धर्म ने पुरुषों की परंपराओं (मरकुस ७:८) को तोराह में जोड़ दिया था। मूसा द्वारा दी गई ६१३ आज्ञाओं में से प्रत्येक के लिए, मौखिक व्यवस्था (Ei – मौखिक व्यवस्था देखें) में लगभग १,५०० अतिरिक्त मानव निर्मित व्यवस्था जोड़े गए जिनका पालन करना यहूदियों के लिए बाध्य था। नतीजतन, जिसे जश्न मनाने के लिए एक उपहार माना जाता था (तोराह के जुए के तहत आकर), सहना एक बोझ बन गया (मौखिक व्यवस्था के जुए के तहत आकर)।

इसके विपरीत, बोझिल मौखिक व्यवस्था के विपरीत, वह जो दयालु निमंत्रण देता है वह यह है: मेरा जूआ अपने ऊपर ले लो और मुझसे सीखो (हिब्रू: मेरा जूआ अपने ऊपर ले लो यह एक रब्बी वाक्यांश है जिसका अर्थ है, स्कूल जाना), क्योंकि मैं मैं हृदय से नम्र और नम्र हूं, और तुम अपनी आत्मा में विश्राम पाओगे (मत्ती ११:२९)। यहूदी धर्म “स्वर्ग का जूआ” की बात करता है, वह प्रतिबद्धता जो किसी भी यहूदी को ईश्वर पर भरोसा करने के लिए बनानी चाहिए, और “तोराह का जूआ”, एक साथ-साथ प्रतिबद्धता जो एक चौकस यहूदी हलाखा की सामान्यताओं और विवरणों को बनाए रखने के लिए करता है। इस सामूहिक आह्वान का मतलब था कि संपूर्ण इज़राइल अपने व्यक्तिगत सदस्यों की वाचा की निष्ठा के लिए जिम्मेदार था। किसी के भी द्वारा किए गए उल्लंघन ने संपूर्ण वाचा के लोगों को ख़तरे में डाल दिया, जिसके गंभीर परिणाम होंगे जैसा कि आचन ने जोशुआ ७ में पाया।

यीशु अपने स्वयं केआसानजूए और हल्के बोझ के बारे में बात करते हैं जब उन्होंने कहा: क्योंकि मेरा जूआ आसान है और मेरा बोझ हल्का है (मत्ती ११:३०), क्योंकि यीशु के माध्यम से मुक्ति केवल विश्वास के माध्यम से आती है। कभी-कभी इन दोनों की तुलना इस प्रकार की जाती है कि यहूदी धर्म की तुलना में, मसीह “सस्ता अनुग्रह” प्रदान करता है। लेकिन येशुआ की इस बात को मत्ती १०:३८ और लूका ९:२३-२४ जैसी टिप्पणियों के साथ रखा जाना चाहिए। आसान जुए में पवित्र आत्मा की शक्ति के माध्यम से ईश्वरत्व के प्रति पूर्ण प्रतिबद्धता शामिल है। इसके लिए एक साथ किसी प्रयास और अधिकतम प्रयास दोनों की आवश्यकता नहीं है – इसमें कोई प्रयास नहीं है कि आवश्यक पल-पल विश्वास भीतर से काम नहीं किया जा सकता है, लेकिन यह परमेश्वर का उपहार है (इफिसियों २:८-९); और अधिकतम प्रयास, इसमें पवित्रता और आज्ञाकारिता का कोई पूर्व निर्धारित स्तर नहीं है जो यहोवा को संतुष्ट कर सके और हमें अपनी उपलब्धियों पर आराम दे सके।

प्राचीन इज़राइल में किसान एक अनुभवहीन बैल को लकड़ी के हार्नेस से अनुभवी बैल के साथ

Ee – मेरे पास आओ, जो थके हुए और बोझ से दबे हुए हैं, और मैं तुम्हें
विश्राम दूंगा मत्ती ११:२०-३० | 7

जोड़करप्रशिक्षित करते थे। बूढ़े जानवर के चारों ओर की पट्टियाँ कसकर खींची गई थीं। उसने भार उठाया. लेकिन छोटे जानवर के चारों ओर का जुआढीला था। वह अधिक परिपक्व बैल के साथ-साथ चलता था, लेकिन उसका बोझहल्का था। इस आयत में मसीहा कह रहे थे, “मैं तुम्हारे साथ चलूँगा। हम एक साथ जुड़ेहुए हैं. लेकिन मैं वजन खींचता हूं और बोझउठाता हूं।”

मुझे आश्चर्य है, यीशुहमारे लिए कितने बोझउठा रहे हैं जिनके बारे में हम कुछ भी नहीं जानते हैं। हम कुछ के बारे में जानते हैं। वहहमारे पापों को वहन करता है। वहहमारी लाज रखता है। वहहमारा शाश्वत ऋण वहन करता है। लेकिन क्या अन्य भी हैं? क्या उसनेहमारे भय को हमारे महसूस करने से पहले ही दूर कर दिया है? क्या उसनेहमारा भ्रम दूर कर दिया है ताकि हमें ऐसा न करना पड़े? वह समय जब हम अपनी शांति की भावना से आश्चर्यचकित हुए हैं? क्या ऐसा हो सकता है कि पीड़ित सेवक ने हमारी चिंताओं को अपने कंधों पर उठा लिया हो और हमारे ऊपर दया का जुआरख दिया हो?635

यह समझना महत्वपूर्ण है कि जब तक मसीहाआध्यात्मिक रहस्योद्घाटन नहीं करता तब तक कोई भी पिताकी पूर्ण समझ तक नहीं पहुंच पाता है। आज तक भी, कोई व्यक्ति विश्वासि होने के लिए केवल बौद्धिक रूप से सहमत नहीं हो सकता है (इब्रानियों ३:७-१९)। जो कोई भी पिता के बारे में पूर्ण ज्ञान प्राप्त करता है वह केवल पुत्र की मध्यस्थता के माध्यम से ही ऐसा करता है, मैरी के माध्यम से कभी नहीं। क्योंकि ईश्वर और मानव जाति के बीच एक ईश्वर और एक मध्यस्थ है, मनुष्य यीशु मसीह (प्रथम तीमुथियुस २:५; यूहन्ना १४:६ भी देखें; प्रेरितों ४:१२; रोमियों ८:३४; इब्रानियों ७:२५, ९:१५; प्रथम यूहन्ना २:१). येशुआ पर वादा किए गए व्यक्ति के रूप में विश्वास करना इज़राइल के लिए पिछले सभी अनुबंधों की पूरी तस्वीर प्राप्त करना है।

मसीहहम पर कभी भी अत्याचार नहीं करेगा या हमें इतना भारी बोझ नहीं देगा जिसे उठाना संभव न हो। उसके जुए का कार्यों की माँगों से कोई लेना-देना नहीं है, मानव परंपरा की तो बात ही छोड़िए। मसीहाके प्रति विश्वासि की आज्ञाकारिता आनंददायक और खुशहाल है। क्योंकि, जैसा कि युहन्नाबताते हैं, यह ईश्वर का प्रेम है: उनकी आज्ञाओं का पालन करना। और उसकी आज्ञाएँ बोझिल नहीं हैं (प्रथम यूहन्ना ५:३)। पापियों के उद्धारकर्ता के प्रति समर्पण सबसे बड़ी मुक्ति लाता है जिसे एक व्यक्ति अनुभव कर सकता है (वास्तव में एकमात्र सच्ची मुक्ति जिसे हम अनुभव कर सकते हैं), क्योंकि केवल येशुआ हा-मेशियाच के माध्यम से ही हम वह बनने के लिए स्वतंत्र हैं जो यहोवाने हमें बनाया है।

१९१५ में पादरी विलियम बार्टन ने लेखों की एक श्रृंखला प्रकाशित करना शुरू किया। एक प्राचीन कथाकार की पुरातन भाषा का उपयोग करते हुए, उन्होंने अपने दृष्टान्तों को सफेड द सेज के उपनाम से लिखा। और अगले पंद्रह वर्षों तक उन्होंने सफ़ेद और उसकी स्थायी पत्नी केतुराह के ज्ञान को साझा किया। यह एक ऐसी शैली थी जिसका उन्होंने आनंद लिया। कहा जाता है कि १९२० के दशक की शुरुआत तक सफ़ेद के अनुयायियों की संख्या कम से कम तीन मिलियन थी। एक सामान्य घटना को आध्यात्मिक सत्य के चित्रण में बदलना हमेशा बार्टन के मंत्रालय का मुख्य विषय रहा है।

Ee – मेरे पास आओ, जो थके हुए और बोझ से दबे हुए हैं, और मैं तुम्हें
विश्राम दूंगा मत्ती ११:२०-३० | 8

एक दिन ऐसा था जब मैं थका हुआ था। क्योंकि मेरे दिन चिन्ता से भरे हुए थे, और मेरी रातें उजड़ गई थीं। और मैं ने कतूरा से कहा,

मैं बेहोश हो जाऊँगा मुझे अपने सोफ़े पर लिटाओ और आराम करो। एक घंटे की जगह के लिए मुझे परेशान न करें। तो मैंने मुझे लिटा दिया.

और मैंने नन्हें पैरों की थपथपाहट सुनी, और नन्हें हाथ मेरे दरवाजे को धक्का दे रहे थे। और कतूरा की बेटी की बेटी मेरे पास आई।

और बोली, दादाजी, मैं आपके साथ लेटना चाहती हूं।

और मैंने कहा, आओ, और हम एक साथ विश्राम करेंगे। अपनी आंखें कसकर बंद करें और बिल्कुल स्थिर रहें। तो क्या हम दोनों आराम करें.

और उसके आराम करने का तरीका यह था। वह मुझे ढकने वाले कंबल के नीचे सरक गई, जिससे उसका सिर और बाकी सब ढक गया, और उसने कहा, दादाजी, आपने अपनी छोटी लड़की को खो दिया है।

तब क्या मैं ने अपनी बेटी को जो मैं ने खो दी थी ढूंढ़ा, और पूछा, मेरी बेटी कहां है?

मेरी छोटी लड़की कहाँ है? और मैंने पूरे कम्बल को टटोला, और मैंने पाया कि वह नहीं थी।

फिर वह चिल्लाई, मैं यहाँ हूँ। और उसने कम्बल उतार फेंका, और हँसी।

और वह दूसरी बार, और तीसरी बार, और कई बार मेरे पास छुपी। और हर बार मैंने उसे कंबल के नीचे छिपा हुआ पाया।

और जब इसने उसे थका दिया, तो वह मेरे ऊपर बैठ गई, इसलिए एक पैर दाहिनी ओर था और एक बाईं ओर था, और उसने मुझे अंगूठे से पकड़ लिया, और उसके छोटे हाथ मेरे दोनों अंगूठे तक नहीं पहुंच सके। और वह पीछे हट गई जिससे उसका सिर मेरे घुटनों के बीच सोफ़े को छू गया, और वह मेरे पेट पर एक उभार के साथ बैठ गई। और वह मुझे घोड़े की तरह बैनबरी क्रॉस और कई अन्य स्थानों तक ले गई।

और बोली- आप मेरे साथ अच्छा समय बिता रहे हैं ना दादाजी?

और मैंने उससे कहा कि यह सच है।

अब एक घंटे के अंत में, मैं उस छोटी लड़की का हाथ पकड़कर आगे आया, और केतुरा ने कहा, तू विश्राम कर चुकी है। मैं देख रहा हूं कि थकान दूर हो गई है।

और ऐसा ही था. क्योंकि उस छोटी लड़की के साथ खेलने के आनंद ने मेरी चिंता को दूर कर दिया था,

Ee – मेरे पास आओ, जो थके हुए और बोझ से दबे हुए हैं, और मैं तुम्हें
विश्राम दूंगा मत्ती ११:२०-३० | 9

और मुझे आराम मिला था।

अब मैं ने यह सोचा, और मुझे स्मरण आया, कि मेरे प्रभु ने कहा था, हे सब थके हुए और बोझ से दबे हुए लोगों, मेरे पास आओ, और मैं तुम्हें विश्राम दूंगा। और मुझे याद आया कि उन्होंनेकहा था कि आराम करते समय मुझे जूआ उठाना चाहिए और इसे आसान महसूस करना चाहिए, और एक बोझ उठाना चाहिए और इसे हल्का महसूस करना चाहिए। और जैसे ही मैंने इसके बारे में सोचा, मुझे पता चला कि उसका क्या मतलब था।